विचार बिन्दु

जीवन में सबसे अच्छा दोस्त वह है, जो आपका सर्वश्रेष्ठ बाहर लाता है। –हेनरी फोर्ड

डिजिटल समय में बौद्धिक संपदा का कॉपीराइट

जब भी जीवन में कुछ नया आता है, उसके साथ बहुत सारी सुविधाएं हमें मिलने लग जाती हैं। लेकिन बहुत बार हमारा ध्यान इस तरफ नहीं जाता है कि नया अपने साथ कुछ चुनौतियां, कुछ उलझनें भी लेकर आता है। अब यही बात देखें कि हाल के बरसों में हम डिजिटल सामग्री के कितने अभ्यस्त हो गए हैं! कभी हम संगीत सुनने के लिए रिकॉर्ड्स खरीदते थे, फिर कैसेट्स, सीडी और पेन ड्राइव तक जा पहुंचे। और अब ये सब बासी हो चुके हैं। अपना मनचाहा सब कुछ हमें इनके बग़ैर ही सुलभ है। ऐसा ही किताबों के मामले में भी हुआ है। मौखिक परम्परा से ताड़पत्र और उनसे मुद्रण तक पहुंचने के बाद अब ज़माना बहुत तेज़ी से डिजिटल की तरफ भाग रहा है। कागज़ पर छपी किताब की बजाय किण्डल जैसे किसी ई रीडर पर किताब पढ़ना आम होता जा रहा है। पुस्तकालयों की जगह ई पुस्तकालय चलन में आने लगे हैं। इससे सुविधा तो हुई है। मेरे दुबले-पतले किण्डल में पांचेक सौ किताबें तो हैं ही, और कम्प्यूटर की मेमॉरी में भी हज़ार-दो हज़ार किताबें पड़ी हैं। और ये सब कोई जगह नहीं घेर रही हैं। जगह भी नहीं घेर रही और इनमें से बहुत सारी किताबों के लिए मैंने कोई कीमत भी नहीं चुकाई है। पढ़ने के शौकीन दोस्तों को यह बात ज़रूर याद आ रही होगी कि हाल में जैसे ही गीतांजलि श्री के उपन्यास रेत समाधि के अंग्रेज़ी अनुवाद को बुकर पुरस्कार मिलने की घोषणा हुई, हममें से बहुतों के पास, हमारे शुभ चिंतकों की कृपा से इस उपन्यास की पीडीएफ आ पहुंची।

किसी भी सामग्री का, चाहे वह किताब हो, संगीत हो, तस्वीर हो, कुछ भी हो इस तरह सुलभ हो जाना निश्चय ही सुखद है। लेकिन यह सबके लिए सुखद नहीं है। इसके साथ बहुत सारे नैतिक, वाणिज्यिक और वैधानिक मुद्दे भी जुड़े हैं, जिनकी तरफ अगर हमारा ध्यान नहीं जाता है, तो जाना चाहिए। पढ़ने के शौकीनों को यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि इण्टरनेट पर किताबों के दो बहुत बड़े ख़ज़ाने हैं, जिनका नाम **प्रोजेक्ट गुटनबर्ग** और **इण्टरनेट आर्काइव** है। अमरीका में अवस्थित **प्रोजेक्ट गुटनबर्ग** पर लगभग साठ हज़ार किताबें, जिनमें से ज़्यादातर क्लासिक श्रेणी की हैं, पढ़ने के लिए निशुल्क उपलब्ध हैं। इसी में यह बात और जोड़ दूं कि ये सब किताबें वे हैं जो कॉपीराइट मुक्त हैं, अर्थात इनके रचनाकारों के निधन को एक निश्चित अवधि बीत चुकी है। यह अवधि अलग-अलग देश में अलग-अलग है। भारत में यह अवधि रचनाकार की मृत्यु के बाद वाले वर्ष से साठ वर्ष की है। कॉपीराइट मुक्त रचनाओं के इस तरह सर्व सुलभ कराने पर कोई बड़ा नैतिक, आर्थिक, वैधानिक मामला नहीं बनता। लेकिन अमरीका का ही एक और संस्थान है **इण्टरनेट आर्काइव**, जहां बहुत सारी ऐसी किताबें भी निशुल्क और सार्वजनिक रूप से सुलभ हैं जो अभी तक कॉपीराइट मुक्त नहीं हैं। इसके परिचय में कहा गया है कि "**इण्टरनेट आर्काइव** लाखों निशुल्क पुस्तकों, चलचित्रों, सॉफ्टवेयर, संगीत, वेबसाइट और अन्य सामग्री की अलाभकारी लाइब्रेरी है"। इसकी स्थापना 1966 में हुई थी। इसका उद्देश्य है कि "जो लोग पढ़ सकने में अक्षम हैं उन्हें सहायता दी जाए, भावी पीढ़ियों के लिए डिजिटल सामग्री को संरक्षित किया जाए और ज्ञान तक पहुंच का जनतांत्रिकरण किया जाए"। शायद ही कोई अध्येता हो जिसने कभी न कभी इस लाइब्रेरी की सेवाओं का लाभ न उठाया हो। लेकिन सन 2020 में अमरीका के चार बड़े प्रकाशकों ने इस लाइब्रेरी के खिलाफ कॉपीराइट के उल्लंघन का एक वाद प्रस्तुत कर दिया। इन प्रकाशकों ने न केवल इण्टरनेट आर्काइव द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं पर सवाल खड़े किये हैं, इन्होंने कोविड महामारी के दौरान मार्च 2020 में इसी लाइब्रेरी द्वारा स्थापित नेशनल **इमरजेंसी लाइब्रेरी** को भी अपनी आपत्तियों के घेरे में लिया है। इस इमरजेंसी लाइब्रेरी की स्थापना के पीछे उद्देश्य यह था कि कोविड महामारी के कारण अधिकांश लाइब्रेरियों के बंद हो जाने से ज्ञान-सामग्री तक शिक्षकों की पहुंच अवरुद्ध हो गई है, अतः उन्हें वैकल्पिक सामग्री उपलब्ध कराई जाए। प्रकाशकों ने इन दोनों सुविधाओं को चुनौती दी और कहा कि इनके कारण बड़े पैमाने पर कॉपीराइट का स्वैच्छिक उल्लंघन हो रहा है और उनकी अनुमति के बिना तथा उन्हें कोई भुगतान किए बग़ैर किताबें (बेशक अपने डिजिटल रूप में) सुलभ कराई जा रही हैं।

कॉपीराइट के जो भी कानून बने हैं वे बहुत पहले के हैं। इस बीच तकनीक ने बहुत भारी बदलाव कर दिए हैं। उन कानूनों पर नए बदलावों के आलोक में विचार हो और कोई व्यावहारिक राह खोजी जाए, जो जितनी इस सामग्री के उपयोगकर्ता के लिए लाभप्रद हो, उतनी ही इस सामग्री के सर्जक के हितों की रक्षक भी हो।

इन आपत्तियों के जवाब में **इण्टरनेट आर्काइव** ने जो तर्क दिये हैं वे भी ग़ौर तलब हैं। उनका कहना है कि वह किसी भी अन्य पुस्तकालय की तरह है। अगर कोई पुस्तकालय किसी किताब की एक प्रति खरीद कर सौ या हज़ार पाठकों को पढ़वा सकता है, तो वह भी तो ऐसा ही कर रहा है। **इण्टरनेट आर्काइव** का कहना है कि वहां से भी एक समय में एक किताब एक ही पाठक को दी जाती है, इसलिए वस्तुतः उनमें और किसी और पुस्तकालय के व्यवहार में कोई अंतर नहीं है। जब पारम्परिक पुस्तकालय किसी किताब को खरीद लेने के बाद चाहे जितने पाठकों को पढ़ने के लिए दे सकता है तो **इण्टरनेट आर्काइव** ऐसा क्यों नहीं कर सकता? लेकिन इस तर्क के जवाब में प्रकाशकों ने यह तर्क दिया कि कागज़ पर छपी किताब और उसका डिजिटल संस्करण समान नहीं हैं, इसलिए इन दोनों के प्रति कानून का नज़रिया भी अलग-अलग होना चाहिए।

यह मामला भले ही अमरीका का है, हम भारतीयों के लिए भी यह विचारणीय तो है ही। ऊपर मैंने रेत समाधि के पीडीएफ संस्करण का ज़िक्र किया। बेशक यह संस्करण और इसका वितरण अवैध था। मान लीजिए किसी ने इस संस्करण को पढ़ कर किताब खरीदने पर होने वाले पैसे बचा लिए तो इससे प्रकाशक का, और लेखक का भी हक़ मारा गया। प्रकाशक ने किताब को प्रकाशित करने पर जो खर्च किया, आपने उसकी भरपाई में अपना योग नहीं दिया। आदर्श स्थित यह है कि लेखक को भी उसके रचना कर्म के लिए रॉयल्टी मिले। अगर किताब बिकेगी ही नहीं तो लेखक को रॉयल्टी कैसे मिलेगी? नैतिक अनैतिक का सवाल तो है ही। यहां यह भी याद दिलाता चलूं कि कॉपीराइट वाली बात भारत में भी समय-समय पर उठती रही है। बहुतों को याद होगा कि **कविता कोश** में अपनी कविताएं शामिल कर लेने पर अनेक कवियों या उनके प्रकाशकों द्वारा आपत्ति करने के बाद उन्हें वहां से हटा दिया गया था।

भारत के संदर्भ में, जहां तकनीक अभी बहुत ज़्यादा चलन में नहीं है, इस बात को संगीत, फ़िल्मों और सॉफ्टवेयर की पायरेसी के माध्यम से भी समझा जा सकता है। वे दिन अब बहुतों की तो स्मृति में भी नहीं होंगे जब हम अपनी पसंद के किसी गाने को बार-बार सुनने के लिए 78 आरपीएम की रिकॉर्ड खरीदते थे। बाद में जब कैसेट वाला ज़माना आया तो बजाय महंगी कैसेट खरीदने के हम खाली कैसेट खरीदकर उस पर गाने भरवाने लगे। और अब तो वह समय आ गया है जब करीब-करीब सारा ही संगीत निशुल्क सुलभ है। इस बात से रिकॉर्ड कम्पनियों और संगीत से जुड़े कलाकारों पर जो प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है, उसकी अनदेखी नहीं की जा सकती। इसी तरह, भारत और बहुत सारे अन्य देशों में ऑरिजिनल सॉफ्टवेयर खरीदने का चलन कम है। सरकारी दफ्तरों तक में पायरेटेड सॉफ्टवेयर का प्रयोग आम है। कम्पनियां इस प्रवृत्ति पर नियंत्रण करने के भरसक प्रयास कर रही हैं पर हम जुगाड़ू लोग हर प्रयास का तोड़ निकाल लेते हैं।

भारत में और खास तौर पर हिंदी समाज में यह भी कहा जाता है कि किताब को हाथ में लेकर पढ़ने का जो सुख है वह उसके डिजिटल संस्करण में नहीं मिलता है। वैसे तो यह अभ्यास की बात है, लेकिन अब जबकि डिजिटल संस्करण तैयार करने वाले लोग किताब के साथ अन्य बहुत सारी सुविधाएं जोड़ते चले जा रहे हैं, देर-सबेर अधिक लोग इनकी तरफ खिंचेंगे, इसमें संदेह नहीं किया जा सकता। इधर इंग्लैण्ड की एक कम्पनी ने टी एस एलियट की प्रख्यात कविता **वेस्टलैण्ड** का जो डिजिटल संस्करण निकाला है उसमें स्वयं कवि की हस्तलिपि में कविता का वह मूल ड्राफ्ट तो है ही जिसमें एज़रापाउण्ड ने अपने हाथों से संशोधन किया था, कविता की एक वीडियो प्रस्तुति और अन्य कवियों, थिएटर निर्देशकों और विद्वानों से इस कविता के बारे में संवाद व चर्चा भी है। कल्पना की जा सकती है कि जब हम **गोदान** का डिजिटल संस्करण पढ़ें तो उसे पढ़ने के साथ-साथ देख और सुन भी सकें। लेकिन जब ये सारी सुविधाएं हमें मिलेंगी तब इनके अनधिकृत उपयोग से होने वाली चुनौतियां भी हमारे सामने होंगी, जैसे आज अमरीका में हैं।

भारत में और विशेष रूप से हिंदी में किताबों के पीडीएफ रूपों और विभिन्न ई पुस्तकालयों की उपादेयता का एक और आयाम है, जिसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए। भारत में और ख़ास तौर पर हिंदी में प्रायः किताबों के दूसरे संस्करण नहीं निकलते हैं, जबकि कई कारणों से उन किताबों की ज़रूरत महसूस की जाती है। ऐसे में उन अप्राप्य किताबों के पीडीफ संस्करण सहायक बनते हैं। ख़ुद मैंने **ई पुस्तकालय** से न जाने कितनी बार इस तरह की मदद ली है। ग़ौरतलब यह भी है कि जो किताब उपलब्ध ही नहीं है, उसके ई संस्करण से किसी को कोई हानि नहीं हो रही है। इसके विपरीत उसकी अप्राप्यता का आंशिक निवारण भी हो रहा है।

मुझे लगता है कि कॉपीराइट के जो भी कानून बने हैं वे बहुत पहले के हैं। इस बीच तकनीक ने बहुत भारी बदलाव कर दिए हैं। उन कानूनों पर नए बदलावों के आलोक में विचार हो और कोई व्यावहारिक राह खोजी जाए, जो जितनी इस सामग्री के उपयोगकर्ता के लिए लाभप्रद हो, उतनी ही इस सामग्री के सर्जक के हितों की रक्षक भी हो।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

पाँवों से सिर पर सात-आठ मटके रखकर नाचना भवाई नृत्य की मुख्य विशेषता

पन्नालाल मेघवाल

राजस्थान में पेशेवर लोक गायकों एवं लोक नृत्यकारों की परंपरागत जातियां पाई जाती थी। भांड, भवाई भाट, नट, सांसी, कंजर, कालबेलिया आदि ऐसे पेशेवर कलाकार थे जो नृत्य गान के माध्यम से अपनी आजीविका कमाते थे। इन कलाकारों के पास जो कला थी। वह एक प्रकार से लोक कला का ही पेशेवर रूप थी। राजस्थान में पेशेवर लोक नृत्यों में भवाई नृत्य अपनी उत्कृष्टता के लिए अत्यधिक लोकप्रिय रहा है। उदयपुर संभाग के एक क्षेत्र में इन नृत्यकारों के समूह बस गये थे, जिन्होंने एक जाति का रूप ले लिया और वे भवाई कहलाए। अन्य पेशेवर लोक कलाकारों की भांति इन भवाई नृत्यकारों ने किसी यजमानी प्रथा का सहारा नहीं लेकर अपने नृत्य को जनसाधारण के मनोरंजन के लिए विकसित किया।

भवाई लोक कला में अनेक कथानक जुडे हैं तो केवल इसलिए कि इन्होंने अपनी कला में नृत्य-नाट्य सम्मिलित करने का प्रयास किया है। यह उनकी मनोरंजन के लिए नये आयाम ढूंढने की ललक का परिणाम है। भवाई नृत्य में विभिन्न शारीरिक करतब दिखाने पर अधिक जोर रहता है, जिसमें शरीर का संतुलन दिखाने का प्रयास किया जाता है। इस कार्य में संतुलन के लिए साधना करने की महत्ती आवश्यकता होती है। भवाई लोग मुख्यतया अपने स्वांगों के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। ये छतीस कौमों के स्वांग धारण करते थे।

इनके द्वारा किये जाने वाले स्वांगों में बोहरा-बोहरी, सूरदास, बाणिया, लोडी-बडी, शंकरिया, कानगुजरी, बाघाजी एवं बीकाजी आदि प्रमुख थे। भवाई नाट्य का माध्यम गीत गद्य और और नृत्य था। इनके नृत्य की मुख्य विशेषताएँ नृत्य अदायगी, शारीरिक क्रियाओं के अद्भुत चमत्कार तथा लयकारी की विविधता थी। अपने अंगों को मरोड कर नाना प्रकार की कसरतें दिखाने में भी ये लोग माहिर होते थे। इन कसरतों में गरूडजी का आसान अडंगनाथ एवं पारसनाथ की मूरत, कछुआ, मछली, मगर, मोर, बंदर एवं सूपडा बनने क्रीडाएँ प्रमुख थीं।

जमीन पर बैठकर अपने दोनों पाँवों से सिर पर मटके रखने में भी ये लोग सिद्धहस्त होते थे। व्यंग्य एवं विनोद में पटु ये लोग मौके पर ही आशु भाषा एवं वाक पटुता से दर्शकों को आश्चर्य चकित कर देते थे। अन्य फुटकर खेलों में कमल का फूल, मटकों का नाच, जलती हुई बोतल का नाच, तलवारों का नाच तथा तीन चोट का नाच मुख्य था। इनमें कोई कथा नहीं रहती थी, नृत्य ही प्रमुख रहता था।

कमल के फूल में नृत्यकार ढोलक की तीव्र थाप पर चकरी खाता हुआ सात रंग की पगडियों को बिखेरकर कमल का फूल बनाता था। यह फूल डंडी तथा पंखुडियों सहित होता था। लगभग आधे घण्टे तक नृत्यकार की जोरदार चकरी देख दाँतों तले अंगुली दबानी पडती थी। मटकों तथा जलती हुई बोतल का नाच भी बडा कमाल का होता था। पाँवों से सिर पर मटके चढाकर उठना-बठना, चकरियाँ लेना तथा बैठकें लगाना आदि ऐसे करतब है जिन्हें भवाई कलाकार ही कर सकते है। तीन चोट में भाला, तलवार तथा बंदूक की तीनों चोटे एक साथ दिखाई जाती थी। नृत्य करते हुए ताल के मान पर ऊपर आकाश में भाला फेंकना, भाला फेंकते ही तुरन्त म्यान से तलवार निकालना और तुरन्त ही बंदूक को दागकर ढोलक के सम पर पुनः भाला झेलना हर किसी के बस का काम नहीं था।

भवाई बचपन से ही यह कला सीख जाते थे। उन्हें किसी प्रकार के विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती थी। इनके प्रदर्शनों में इनकी स्त्रियाँ भाग नहीं लेती थीं। स्त्री पात्रों की भूमिका पुरूष ही निभाते थे। स्त्री पात्रों की भूमिका निभाने वाले पुरूष बाल बडे रखते थे तथा पात्र के अनुरूप ऐसे वस्त्राभूषण धारण करते थे जिससे जनता यह समझ भी नहीं पाती थी कि यह पुरूष है। जनता यही समझती है कि पुरूषों के साथ स्त्रियाँ भी नृत्य कर रही है।

वस्तुतः भवाई गाँवों में रहकर गाँवों में ही अपनी कला का प्रदर्शन करते थे। इसके पीछे उनकी जीविकोपार्जन का रहस्य जुडा हुआ था, लेकिन बदलते परिवेश में अब इस कार्य में अधिक आकर्षण नहीं रहने के कारण मूल भवाई इस कला को छोडते जा रहे है जबकि शहरी लोग शौकिया इस कला को सीख रहे हैं। शौकियाना सीखने वालों में अब शहरी पुरूष एवं महिलाएं भी सम्मिलित हो गई है। सिर पर सात-आठ मटके रखकर नृत्य करना, जमीन से मुँह से रूमाल उठाना, गिलासों पर नाचना, थाली के किनारों पर नृत्य करना, तलवारों की धार पर नृत्य करना, धधकते अंगारों पर नृत्य करना, काँच के टुकडों पर नृत्य करना आदि इसकी विशेषता है। यह नृत्य लगभग लोक गीतों पर ही आधारित है। अब भवाई लोक नृत्य कुछ बालिकाओं, महिलाओं, पुरुषों द्वारा शौकियाना अथवा पेशेवर किया जाता है।

–पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार।

परीक्षा में जनेऊ उतारने पर विप्र समाज में रोष

उदयपुर, (कासं)। स्थानीय बीएन पीस विधालय, उदयपुर में अध्यापक पात्रता (रीट) परीक्षा के दौरान विप्र छात्र हार्दिक व्यास द्वारा धारण की जनेउ को पुलिस कांस्टेबल द्वारा ब्राह्मणत्व की आस्था पर जोर जबरदस्ती कर काटने पर आमादा होने पर बाद में जबरन उतार दी गई। विप्र फाउण्डेशन प्रदेश अध्यक्ष प्रदेश अध्यक्ष के.के.शर्मा, महामंत्री लक्ष्मी जोशी, युवा प्रदेश अध्यक्ष नरेन्द्र पालीवाल, उदयपुर जिलाध्यक्ष हिम्मतलाल नागदा, बांसवाडा जिलाध्यक्ष योगेश जोशी, सागवाडा जिलाध्यक्ष प्रकाश व्यास संयुक्त रूप विज्ञप्ति जारी कर बताया कि जनेऊ (यज्ञोपवित) एक ब्रह्म समाज का संस्कार है जिसको बहुत विधि विधान, मंत्रोचार के साथ विप्र (बटुको) को धारण करवाया जाता है। शर्मा ने बताया कि जनेउ सूत का बना हुआ एक धागा होता है जिसमें कोई वस्तु छिपाई नहीं जा सकती है। प्रशासन द्वारा जबरन इस तरह की घटना कारित की गई जिससे संपूर्ण विप्र समाज में रोष व्याप्त है।

26 गोवंश को मुक्त कराया

धौलपुर, (निसं)। अवैध रूप से तस्करी को ले जा रहे गौवंशों को स्थानीय गो सेवक की सूचना पर बजरंग दल कार्यकर्ताओं ने 26 नंदी को मुक्त कराया।

बजरंग दल जिला सह संयोजक राम शर्मा ने बताया कि सुबह स्थानी गौ सेवक से सूचना मिली थी कि एक गोवंश से भरा हुआ ट्रक खनपुरा बाड़ी धौलपुर रोड पर खड़ा हुआ है। सूचना मिलने पर बजरंग दल

■ **मौके पर से ड्राइवर और खलासी दोनों ट्रक छोड़कर भाग खड़े हुए**

कार्यकर्ताओं विहिप जिला गौ सेवा प्रमुख चंद्र प्रताप धाकरे बाड़ी प्रखंड संयोजक भूरा पहलवान बाड़ी प्रखंड सह संयोजक समीर गोस्वामी के साथ मौके पर पहुंचे। मौके पर से

स्थानीय गो सेवक की सूचना पर बजरंग दल कार्यकर्ताओं ने 26 नंदी को मुक्त कराया।

ड्राइवर और खलासी दोनों ट्रक छोड़कर भाग चुके थे। आगे की कार्रवाई हेतु सदर थाना पुलिस धौलपुर को सूचना दी गई जिस पर पचगांव चौकी पुलिस कार्यवाही हेतु तुरंत मौके पर पहुंची पुलिस ने मौका मुआयना कर मेडिकल परीक्षण हेतु चिकित्सक को बुलाया पशु चिकित्सक राम अवतार सिंघल द्वारा सभी गोवंश का निरीक्षण किया।

सभी गोवंश नंदीओ को सकुशल पाया गया मेडिकल के उपरांत धौलपुर पुलिस और बजरंग दल कार्यकर्ताओं की देखरेख में 26 नंदीओ को बिजौली गौशाला में सकुशल छोड़ा गया साथ कि ट्रक को पुलिस द्वारा आगे की कार्यवाही हेतु जप्त किया गया।

बांसियाल रिजर्व कंजर्वेशन में दिखे प्रवासी पक्षी कुरजा, खेतड़ी बनेगा बड़ा पर्यटक हब

अरावली की पहाड़ियों में झरने बहने से बढ़ सकती है पर्यटकों की आवाजाही

खेतड़ी, (निसं)। देश की राजधानी दिल्ली से मात्र 160-65 किलोमीटर राजस्थान की राजधानी जयपुर से मात्र 155 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। रजवाड़ा के समय की बड़ी रियासत खेतड़ी रियासत काल में इसे जयपुर स्टेट की सबसे बड़ी रियासत का दर्जा हासिल तक इसे प्रिंसली स्टेट के नाम से जाना जाता था।

खेतड़ी का नाता जहां नेहरू परिवार से था तो वहीं विवेकानंद और खेतड़ी नरेश राजा अजीत सिंह के रिश्ते पूरे विश्व में विख्यात है। खेतड़ी स्वामी विवेकानंद की कर्म स्थली रही थी। उस समय खेतड़ी रियासत का देश विदेश में बोलबाला था। यहां के अंतिम राजा सरदार सिंह बहादुर भारत के संविधान लिखने वाली टीम के सदस्य थे। वहीं उनको लाओस देश का राजदूत भी बनाया गया था। लेकिन पिछले कुछ समय से इस रियासत का नाम गुमनामी के अंधेरे में चला गया। लेकिन अब यह खेतड़ी पर्यटक नगरी के रूप में विकसित हो रही है। आने वाले समय

बांसियाल रिजर्व कंजर्वेशन व आस-पास के क्षेत्रों में इन दिनों प्रवासी पक्षी कुरजा देखे जा रहे हैं।

में एक बड़ा पर्यटक हब बनेगा। यहां के वन्य अभ्यारण में दर्जन से भी अधिक पैंथर वन्यजीव अन्य पक्षी मौजूद है। वहीं अजीत विवेक संग्रहालय पर्यटकों के मुख्य आकर्षण का केंद्र है। यह अजीत सागर बांध ऐतिहासिक पन्ना सागर तलाब भोपालगढ़ फोर्ट कई ऐसे स्थान है जो विदेशी सैलानियों को भी अपनी ओर आकर्षित कर रहा है।

खेतड़ी के वन्य अभ्यारण बांसियाल रिजर्व कंजर्वेशन व पास पड़ौस के क्षेत्रों में इन दिनों प्रवासी पक्षी कुरजा देखे जा रहे हैं। साथ ही बरसात के मौसम में अरावली की पहाड़ियों में कई जगहों पर झरने बहने लगे हैं। जिसके चलते शेखावाटी का यह क्षेत्र पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। बरसात के मौसम में अक्सर भोपालगढ़ के कई मंदिरों में हरियाणा अन्य स्थानों से आने वाले पर्यटक साग रोटा बनाकर गोठ का आयोजन करते हैं। यहां वन्य अभ्यारण, अजीत विवेक संग्रहालय, भोपालगढ़, पन्ना सागर

■ **वन्य अभयारण्य में दर्जन से भी अधिक पैंथर मौजूद हैं**

तालाब सहित कई ऐसे स्थल है। जिसको देखने के लिए पर्यटकों की अब आवाजाही बढ़ सकती है।

वन विभाग के रेंजर विजय कुमार फगेड़िया ने बताया कि प्रवासी पक्षी कुरजा अक्सर अगस्त, सितंबर के माह में राजस्थान में शेखावाटी क्षेत्र में देखे जाते हैं। लेकिन खेतड़ी वन्य अभ्यारण अरावली की पहाड़ियों में बरसात के मौसम में हरियाली छाई हुई है। ऐसे में प्रवासी पक्षियों के लिए यह एक सुरक्षित स्थान बन गया है। जिसके कारण कुरंजा व अन्य प्रजातियों के पक्षी यहां दिखाई दे रहे हैं। वन्य अभ्यारण में इनके दाना पानी के लिए सभी अन्य कर्मियों को अलर्ट कर दिया गया है और समय-समय पर परिंडों में दाना पानी डलवाया जा रहा है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 25 जुलाई, 2022

सावन मास, कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2079, मृगशिरा नक्षत्र रात्रि 1:06 तक, धुव्र योग दिन 3:03 तक, तैतिल करण सांय 4:16 तक, चन्द्रमा दिन 11:33 पर मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-वृष, मंगल-मेष, बुध-कर्क, गुरू-मीन, शुक्र-मिथुन, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग और अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 1:06 तक है। आज सोम प्रदोष व्रत और सावन का दूसरा सोमवार है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः अमृत सूर्योदय से 7:32 तक, शुभ 9:12 से 10:53 तक, चर 2:14 से 3:54 तक, लाभ-अमृत 3:54 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:51, सूर्यास्त 7:15

मेष
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

वृष
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। दिन के मध्यान्ह पूर्व में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक कार्यों में प्रगति होगी और कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे।

कर्क
अपने आर्थिक मामलों को दिन के मध्यान्ह पूर्व में करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी और आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

कन्या
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला
आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य को दिन के मध्यान्ह पश्चात करने का प्रयास करे। दिन के मध्यान्ह पूर्व में अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं।

वृश्चिक
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

धनु
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

कुंभ
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी और व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मीन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। भाई-बंधुओं के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।